P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के परम्परागत व्यवसाय में परिवर्तन एवं राजनीतिक सहभागिता

(नैनीताल नगर के नैनी झील में कार्यरत नाविक श्रमिकों के संदर्भ में)

धर्मेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
चमनलाल महाविद्यालय,
लण्ढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड,
भारत

सारांश

भारतीय संघ के अंतर्गत बनाये गये तीन नवोदित राज्यों में उत्तराखंड एक महत्वपूर्ण हिमालयी राज्य है। इस राज्य का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इसका जन्म एक लम्बे जन आंदोलन की परिणति थी और एक सीमांत राज्य होने के नाते इसकी सीमाएं चीन तथा नेपाल जैसे भारत के महत्वपूर्ण पड़ोसी राज्य को छूती है।

उत्तराखंड के नैनीताल नगर के नाविक श्रमिकों में हो रहे परम्परागत व्यवसाय तथा राजनीतिक सहभागिता की प्रक्रिया आधारित है। सामाजिक राजनीतिक विचार के द्वारा आधुनिक काल में एशिया अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के विकासशील समाजों में हो रहे सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया को समझने के लिए परम्परागत व्यवसाय एवं राजनीतिक सहभागिता की अवधारणा का प्रयोग किया है।

चूंकि नैनी झील नैनीताल में कार्यरत नाविक श्रमिकों की संख्या 50 है इसलिए इस ईकाइ के छोटे होने के कारण यह नहीं समझा जाता कि अध्ययन के लिए इनमें से कोई निर्देशन लिया जाये। अतः ये लगभग सभी 50 नाविक श्रामिकों को अध्ययन में सम्मलित किया गया। शोध में तथ्यों की प्राप्ति के प्राथमिक श्रोतों के अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त द्वितीयक श्रोतों द्वारा समंको की प्राप्ति की गई।

व्यक्तिगत विकास और मनोवृत्तियों के निर्धारण में व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति को जिस परिवेश में प्रशिक्षित किया जाता हैं वे उसकी उपलब्धि मूल्य और आकांक्षाओं के स्तर को प्रभावित करते है।

उत्तरदाताओं से साक्षात्कार पत्रक भरवाते समय उसकी सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्थिति, राजनीतिक सहभागिता और उत्तराखंड आंदोलन पर उनके विचार जानने का प्रयास किया गया है।

अतः अध्ययनकर्त्ता ने अपने शोध में यह पाया है कि परम्परागत व्यवसाय होने के कारण नाविक श्रमिक आज भी अपनी आय को लेकर के पर्यटक व्यवसाय के ऊपर निर्भर है। पर्यटन व्यवसाय होने के कारण नाविक श्रमिकों को पारिवारिक समस्या से पूरी तरह निदान नहीं मिला है जिसका मूल कारण उनकी कम आय वृद्धि है। कोई अन्य आय का स्त्रोत न होने के कारण नाविक श्रमिक पूर्ण रुप से पर्यटन व्यवसाय पर ही निर्भर है।

मुख्य शब्द : नैनीताल, साक्षात्कार, सामाजिक, आर्थिक, उत्तराखंड, जनसंख्या का पलायन, परिवारों का विघटन ।

प्रस्तावना

प्रत्येक देश में कुछ परम्परागत व्यवसाय होते है इन व्यवसायों का सम्बन्ध उस देश की परिस्थिति आवश्यकता और काल विशेष से होता हे जब उस देश के उद्योगों में विशेषीकरण का प्रयोग किया जाता है तो इसका सबसे बुरा प्रभाव परम्परागत व्यवसायों पर पडता है। इस संदर्भ में उत्तराखंड की सामाजिक और भोगौलिक स्थिति कुछ विशेष है कि यहां के निवासियों को इन दोनों की मार झेलनी पड़ती है। यह दोनों स्थितिया अनेक दृष्टिकोण से यहां के निवासियों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है, भूमि का समतल न होना, अनउपजाऊ होना, सिंचाई के साधनों का अभाव, जाति व्यवस्था का प्रभावी होना आदि अनेक समस्याओं ओर विकृतियों के लिए उत्तरदायी है। यदि समाजशास्त्रीय शोध साहित्य का अध्ययन करते है तो पातें है कि उपरोक्त कारणों से यहॉ की युवा

जनसंख्या का पलायन, परिवारों का विघटन, पलायन के बाद अधिकतर युवाओं को छोटे–मोटे रोजगार का मिल पाना धीमे विकास का परिचायक है।

भारतीय संघ के अंतर्गत बनाये गये तीन नवोदित राज्यों में उत्तराखंड एक महत्वपूर्ण हिमालयी राज्य है। इस राज्य का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इसका जन्म एक लम्बे जन आंदोलन की परिणति थी और एक सीमांत राज्य होने के नाते इसकी सीमाएं चीन तथा नेपाल जैसे भारत के महत्वपूर्ण पड़ोसी राज्य को छूती है।

भारत में स्वाधीनता की प्राप्ति स्वयं एक बडें जन आंदोलन का परिणाम था। यह भारतीय जनता की बढती हुई सहभागिता और सामाजिक आर्थिक न्याय तथा प्रजातंत्र के प्रति उसकी बढती हुई अभिलाशा की अभिव्यक्ति थी। इसी प्रकार स्वाधीनता के पश्चात उत्तराखंड राज्य की प्राप्ति के लिए वर्षो तक चलाया गया जन आंदोलन और उसकी परिणति के रुप में भातरीय संघ के भीतर उत्तराखंड राज्य की प्राप्ति में एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि गाँधीवादी तरीकों से चलाया गया जन आंदोलन आज भी अपने राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल सिद्ध हो सकता है।

प्रस्तुत शोध के लिए उत्तराखंड के नैनीताल नगर के नाविक श्रमिकों में हो रहे परम्परागत व्यवसाय तथा राजनीतिक सहभागिता की प्रक्रिया आधारित है। सामाजिक राजनीतिक विचार के द्वारा आधुनिक काल में एषिया अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के विकासशील समाजों में हो रहे सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया को समझने के लिए परम्परागत व्यवसाय एवं राजनीतिक सहभागिता की अवधारणा का प्रयोग किया है।

साहित्य सर्वेक्षण

भारत जैसे तीव्र गति से प्रगति की ओर अग्रसर समाजों में राजनीतिक विकास की अवधारणा का अत्यधिक महत्व होता है। और यह महत्व तब ओर भी अधिक बढ़ जाता है जब हम भारत के किसी हिमालयी राज्य के विश्व प्रसिद्ध नगर में निवासरत किन्ही ऐसे श्रमिकों की राजनीतिक दशा का अवलोकन करने का प्रयास करते है। जो अपने समाज में ही रहे विभिन्न परिवर्तनों से प्रभावित हो रहे है।

लूसियन पाई के अनुसार– पुरानें जीवन मूल्यों तथा सामाजिक आर्थिक धारणाओं का नई परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलन तथा समायोजन भारत में राजनीतिक विकास के अध्ययन में बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है। एक विकासोन्मुख समाज में परम्परा तथा आधुनिकता में समायोजन किस प्रकार राजनीतिक विकास को प्रभावित करता है। इसका विशेषण राजनीतिक विकास के अध्यताओ के लिए महत्वपूर्ण है।

राजनीतिक विकास की अवधारणा पर विभिन्न–विभिन्न लेखकों द्वारा इसके विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया है और उन विभिन्न कारकों का भी अध्ययन किया गया है। जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से राजनीतिक विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करते है। तथापि राजनीतिक विकास की प्रक्रिया में अनेक तत्वों की भूमिका और महत्व का अध्ययन किया गया है। परन्तु एक सामान्य सहमति इस बात पर है जैसा रिग्स ने कहा है कि ''राजनीतिक विकास का अभिप्राय लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया में सरकार पर लोकप्रिय नियंत्रण के विकास से लिया गया है।''

अध्ययन के उद्देश्य

नैनीताल नगर में नैनी झील में कार्यरत नाविक श्रमिकों में परम्परागत व्यवसाय एवं राजनीतिक सहभागिता का अध्ययन से संदर्भित शोध के उद्देश्य निम्न प्रकार है–

1. नविक श्रमिकों में हो रहे परम्परागत व्यवसाय में परिवर्तन एवं राजनीतिक सहभागिता का अध्ययन करना।
2. उत्तराखंड राज्य के अस्तित्व में आने के बाद नाविक श्रामिकों की स्थिति का अध्ययन करना।
3. नाविक श्रामिकों के व्यवसाय पर नगरीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

उपकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उपकल्पनाएँ निर्मित की गई है–

1. नाविक श्रमिकों के परम्परागत व्यवसाय और व्यवसायिक परिवर्तन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विभिन्न राजनीतिक दलों की सक्रियता और नाविक श्रमिकों में सम्बन्ध पाया जाता है।
3. नगरीकरण व नाविक श्रमिकों के व्यवसाय में सकारात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।

अध्ययन पद्धति

चूंकि नैनी झील नैनीताल में कार्यरत नाविक श्रमिकों की संख्या 50 है इसलिए इस ईकाइ के छोटे होने के कारण यह नहीं समझा जाता कि अध्ययन के लिए इनमें से कोई निर्देशन लिया जाये। अतः ये लगभग सभी 50 नाविक श्रामिकों को अध्ययन में सम्मलित किया गया। शोध में तथ्यों की प्राप्ति के प्राथमिक श्रोतों के अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त द्वितीयक श्रोतों द्वारा समंको की प्राप्ति की गई।

विश्लेषण

व्यक्तिगत विकास और मनोवृत्तियों के निर्धारण में व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति को जिस परिवेश में प्रशिक्षित किया जाता हैं वे उसकी उपलब्धि मूल्य और आकाक्षाओं के स्तर को प्रभावित करते है।

उत्तरदाताओं से साक्षात्कार पत्रक भरवाते समय उसकी सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्थिति, राजनीतिक सहभागिता और उत्तराखंड आंदोलन पर उनके विचार जानने का प्रयास किया गया है। निर्देशन के अन्तर्गत वैवाहिक स्थिति, धर्म, परिवार का आकार पारिवारिक स्वरुप आय शिक्षा और राजनीतिक सम्बद्धंता के आधार पर वर्णित निम्न प्रकार है–

लिंग

मानव समाज में सामाजिक विभेदीकरण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार पुरुष स्त्री विभेद रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में सभी नाविक श्रमिक पुरुष है जिनकी संख्या 50 है तथा जिनका प्रतिशत सौ है।

धर्म

धर्म विश्वास और व्यवहार का परिचायक है। अध्ययनकर्त्ता ने जिन नाविक श्रमिक उत्तरदाताओं का अध्ययन किया है उनमें हिन्दू धर्म को मानने वाले 48 व्यक्ति व मुस्लिम धर्म में विश्वास रखने वाले दो व्यक्ति है जिनका प्रतिशत 96 प्रतिशत है और मुस्लिम उत्तरदाता का 4 प्रतिशत है।

आयु वर्ग

सारणी नं0–1

क0 सं0	आयुवर्ग	संख्या	प्रतिशत
1.	18–25	06	12
2.	25–30	02	04
3.	30–35	12	24
4.	35–40	08	16
5.	40–45	06	12
6.	45–50	04	08
7.	50–55	02	04
8.	55–60	06	12
9.	60–ऊपर	04	08
	कुल योग	50	100

सारणी नं0–1 के अनुसार आयु वर्ग का आकलन करने पर प्राप्त आकड़े इस प्रकार है, 18 से 25 वर्ष आयुवर्ग में 6 व्यक्ति 12 प्रतिशत, 25 से 30 वर्ष आयुवर्ग में 02 व्यक्ति 4 प्रतिशत, 30 से 35 वर्ष आयुवर्ग में 12 व्यक्ति 24 प्रतिशत, 35 से 40 वर्ष आयुवर्ग में 08 व्यक्ति 16 प्रतिशत, 40 से 45 वर्ष आयुवर्ग में 06 व्यक्ति 12 प्रतिशत, 45 से 50 वर्ष आयुवर्ग में 04 व्यक्ति 8 प्रतिशत, 50 से 55 वर्ष आयुवर्ग में 02 व्यक्ति 4 प्रतिशत, 55 से 60 वर्ष आयुवर्ग में 06 व्यक्ति 12 प्रतिशत तथा 60 से ऊपर आयुवर्ग में 04 व्यक्ति 8 प्रतिशत है।

वैवाहिक स्थिति

सारणी नं0–2

क0 सं0	वैवाहिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1.	विवाहित	42	84
2.	अविवाहित	08	16
4.	अन्य	–	–
	कुल योग	50	100

सारणी नं0–2 के अनुसार नाविक श्रमिकों में वैवाहिक स्थिति का आकलन किया गया जिसमें उत्तरदाता 50 व्यक्तियों में से 42 व्यक्ति विवाहित है जिनका प्रतिशत 84 है व अविवाहित व्यक्तियों की संख्या 08 है जिनका प्रतिशत 16 है और अन्य व्यक्ति 0 प्रतिशत है।

परिवारिक स्वरुप

सारणी नं0–3

क0 सं0	परिवार का स्वरुप	संख्या	प्रतिशत
1.	एकल	08	16
2.	संयुक्त	42	84
	कुल योग	50	100

सारणी नं0–3 के अनुसार नाविक श्रामिकों के पारिवारिक स्वरुप का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है जिसमें एकल परिवार के रुप में 8 व्यक्ति जिनका प्रतिशत 16 है तथा संयुक्त परिवार के रुप में 42 व्यक्ति जिनका प्रतिशत 84 है जो साक्षात्कार देने वाले व्यक्तियों का कुल प्रतिशत 100 है।

पारिवारिक आकार

सारणी नं0–4

क0 सं0	परिवार में सदस्यों की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1.	0–2 तक	2	4
2.	2–4	18	36
3.	4–6	12	24
4.	6–8	8	16
5.	8–ऊपर	10	20
	कुल योग	50	100

अध्ययनकर्त्ता ने नैनीताल नगर में निवासरत नाविक श्रमिकों के पारिवारिक आधार को सारणी नं0–4 के द्वारा जानने का प्रयास किया है जिसमें दर्शाया गया है कि नाविक श्रमिकों के परिवार में सदस्यों की संख्या व प्रतिशत का आंकलन किया है। जिसमें 0 से 2 सदस्य है ऐसे 2 परिवार है जिनका प्रतिशत 4 है। 2 से 4 सदस्य है ऐसे परिवार 18 है जिनका प्रतिशत 36 है। 4 से 6 सदस्य जिस परिवार में है उनकी संख्या 12 है व प्रतिशत 24 है। 6 से 8 सदस्य के परिवारों की संख्या 8 है जिनका प्रतिशत 16 है। तथा 8 सदस्यों से ऊपर के परिवारों की संख्या 10 है जो 20 प्रतिशत है। अतः 50 उत्तरदाताओं के आधार का कुल योग 100 प्रतिशत है।

शैक्षिक स्तर

सारणी नं0–5

क0 सं0	शिक्षा का स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	02	04
2	प्राथमिक स्तर	08	16
3	जूनियर हाईस्कूल	14	28
4	हाईस्कूल	08	16
5	इण्टरमीडिएट	16	32
6	विश्वविद्यालय स्तर	02	04
	योग	50	100

सारणी नं0–5 में अध्ययनकर्त्ता नें उत्तरदाताओं के शैक्षिक स्तर को जानने का प्रयास किया है जिसमें अशिक्षित व्यक्तियों की संख्या 02 है जिसका प्रतिशत 04 है। प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की संख्या 08 है जो 16 प्रतिशत है। जूनियर हाईस्कूल तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की संख्या 14 है जो उत्तरदाताओं का 28 प्रतिशत है। हाईस्कूल तक शिक्षा ग्रहण करने वाले श्रमिकों की संख्या 08 है जिनका प्रतिशत 16 है। इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की संख्या 16 है जिनका प्रतिशत 32 है। विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने वाले श्रमिकों की संख्या 02 है जिनका कुल प्रतिशत 4 है व समस्त 50 नाविक श्रमिकों के विभिन्न शैक्षिक स्तरों का कुल प्रतिशत 100 है।

मासिक आय

सारणी नं0–06

क्र0 सं0	मासिक आय	संख्या	प्रतिशत
1.	1500–2500	24	48
2.	2600–3500	08	16
3.	3600–4500	04	08
4.	4600–5500	12	24
5.	5600–6500	02	04
	योग	50	100

सारणी नं0–06 में नाविक श्रमिकों की विभिन्न मासिक आय का आकलन करने का प्रयास किया गया है। जिससे 1500 से 2500 की मासिक आय वाले व्यक्तियों की संख्या 24 है जो उत्तरदाताओं का 24 प्रतिशत है। 2600 से 3500 की आय वालों की संख्या 08 है जो 16 प्रतिशत है। 3600 से 4500 आय वाले 04 व्यक्ति है जिनका प्रतिशत 08 है। 4600 से 5500 की आय वाले 12 व्यक्ति है जिनका प्रतिशत 24 है। 5600 से 6500 की आय वाले व्यक्तियों की संख्या 02 है जिनका प्रतिशत 04 हैं। विभिन्न स्तरों पर मासिक आय का कुल प्रतिशत 100 है।

राजनीतिक सम्बन्द्धता

सारणी नं0–07

क्र0 सं0	राजनीतिक दल	संख्या	प्रतिशत
1.	क्षेत्रीय दल	18	36
2.	राष्ट्रीय दल	08	16
3.	अन्य	24	48
	योग	50	100

सारणी नं0–07 में नाविक श्रामिकों में राजनीतिक सहभागिता का पता लगाने का प्रयास किया गया है जिसमें क्षेत्रीय दलों पर विश्वास करने वालों में 18 व्यक्ति है जो उत्तरदाताओं का 36 प्रतिशत है। राष्ट्रीय दलों पर विश्वास करने वाले व्यक्तियों की संख्या 16 प्रतिशत है व किसी भी दल पर विश्वास न करने वाले व्यक्तियों की संख्या 48 प्रतिशत है।

उत्तराखंड आंदोलन में सहभागिता की स्थिति

सारणी नं0–8

क्र0 सं0		संख्या	प्रतिशत
1.	आंदोलन में सहभागिता	39	78
2.	आंदोलन में असहभागिता	11	22
	योग	50	100

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि नैनी झील में कार्यरत श्रमिकों में 78 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उत्तराखंड आन्दोलन के दौरान विभिन्न धरनों प्रदर्शनों बंद एवं हडतालों में अपनी सहभागिता की इससे पता चलता है कि इन नाविक श्रमिकों में उत्तराखंड राज्य प्राप्ति का सपना था। साक्षात्कार के दौरान अध्ययनकर्त्ताओं ने पाया कि अधिकांश उत्तरदाताओं का सपना था कि नये राज्य की प्राप्ति के उपरान्त सरकार उनके लिए कुछ कल्याणकारी कार्य करेगी, परन्तु अभी तक इन श्रमिकों के कल्याण के लिए सरकार द्वारा कोई योजना नहीं बनाई गई।

अर्न्तपीढ़ीगत व्यवसाय

सारणी नं0–9

क्र0 सं0	पिता का परम्परागत व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत	क्र0 सं0	उत्तरदाता का व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
1.	नाविक	43	86	1.	नाविक	50	100
2.	अन्य व्यवसाय	07	14	2.	अन्य	00	00
	कुल योग	50	100		कुल योग	50	100

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 100 प्रतिशत नाविक उत्तरदाताओं के 86 प्रतिशत पिता भी नाव चलाने का कार्य करते थे जबकि 14 प्रतिशत पिता अन्य व्यवसायों को आजीविका के रुप में अपनाते थे। साक्षात्कार के दौरान यहॉ पाया गया कि अन्य व्यवसायों में 14 प्रतिशत पिताओं का व्यवसाय लकड़ी, लोहे से निर्मित छोटे–मोटे कृषि यंत्र एवं स्वर्णों के खेतों में हल जोतने का कार्य करते थे। अतः स्पष्ट है कि नवोदित उत्तराखंड के नाविक श्रमिकों में लगभग भावात्मक गतिशीलता देखने को मिलती है।

निष्कर्ष

इस शोध कार्य के लिए अध्ययनकर्त्ता ने उत्तराखंड के नैनीताल नगर में निवासरत नाविक श्रमिकों में हो रहे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया का अध्ययन किया है। अध्ययनकर्त्ताओं ने अपने मूल उद्देश्यों जिनमें नाविक श्रमिकों में हो रहे राजनीतिक विकास तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का पता लगाने का समुचित प्रयास किया है तथा अपने मूल उद्देश्यों के सन्दर्भ में राजनीतिक सहभागिता तथा राजनीतिक जागरुकता में वृद्धि हुई है या नहीं।

अध्ययनकर्त्ता ने अपने अध्ययन में साक्षात्कार पत्रक तथा प्राथमिक स्रोंतों का प्रयोग करते हुये यह पाया है कि नाविक श्रमिकों के जीवन स्तर में राजनीतिक सहभागिता के सन्दर्भ में कुछ सुधार आया है और उनका शैक्षिक स्तर भी ऊँचा हुआ है।

अतः अध्ययनकर्त्ता ने अपने शोध में यह पाया है कि परम्परागत व्यवसाय होने के कारण नाविक श्रमिक आज भी अपनी आय को लेकर के पर्यटक व्यवसाय के ऊपर निर्भर है। पर्यटन व्यवसाय होने के कारण नाविक श्रमिकों को पारिवारिक समस्या से पूरी तरह निदान नहीं मिला है जिसका मूल कारण उनकी कम आय वृद्धि है। कोई अन्य आय का श्रोत न होने के कारण नाविक श्रमिक पूर्ण रुप से पर्यटन व्यवसाय पर ही निर्भर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

'एप्टर डेविड ई0,' ''दि पॉलिटिकल किंगडम इन युगान्डा,'' प्रिंसटन, एन0 जे0: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1961.

'घिल्ड़ियाल ए0 के0', ''पॉलिटिकल डेवलपमेंट इन गढ़वाल'', नई दिल्ली, क्लासिकल पब्लिषिंग कम्पनी, 1994.

'पाई ल्यूसियन डब्ल्यू', पॉलिटिकल, पर्सनॉलिटी एण्ड नेंशन–बिल्डिंगः वर्माज सर्च फॉर आइडेन्टीटी, ''न्यू–हेवन, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1963.

भारत की जनगणना–2001, सीरीज–6 उत्तराखंड फाइनल पोपुलेशन.

पं. हरि कृश्ण रतूड़ी, द्वितीय सम्पादित (कठोच, डॉ. यशवंत सिंह) संस्करण 2007

डॉ. बलोदी, राजेन्द्र प्रसाद, उत्तराखड़ का सम्रग ज्ञान कोष, विनसर पब्लिकेशन, देहरादून, 2010.

जोहरी, जे.सी., राजनीतिक संकल्पनाएं तथा विचारधाराएं, साहित्य भवन पब्लिसर्स प्रा. लि. आगरा, 2007.

जॉन्स, मोरिसः पॉलिटिकल रिकरुटमेंट एण्ड डेवलपमेंट, इन कोलिन लेयस (सपा.) पॉलिटिकल एण्ड चेंज इन डेवलपिंग कन्ट्रीज, लंदन, कैम्ब्रिज यूनि. प्रैस, 1999.

जैदी रेहाना, मध्य हिमालयी क्षेत्र के राजाओं एवं मुगल शासकों के उपहारों–उपाधियों का आदान–प्रदान तथा उसका सांस्कृतिक प्रतिफल शोधप्रत्रा, इतिहास, अंक 1, आई. सी. एच. आर. नई दिल्ली 2003–2004.

सांख्यिकी पत्रिका–2017, मुद्रण 3 मार्च 2018.